بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 29 मई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 29 ,1405 हश)

आँहज़रत ﷺ के सच्चे सेवक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. की आजज़ी व इन्कसारी की घटनाएं तथा अपनी जमाअत को विनय और विनम्रता धारण करने का उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 29.05.2026
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أنْ لا إلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۔ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّينَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया: आँहज़रत ﷺ की गुलामी में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आजज़ी और इंकिसारी की घटनाएं और अपनी जमाअत को आजज़ी और इंकिसारी इख़्तियार करने की नसीहत के बारे में आज कुछ बयान करूंगा। आप अलै. की आजज़ी को देखते हुए ख़ुद अल्लाह तआला ने इसकी सनद को आप अलै. को अता फ़रमाई। 18 मार्च 1907 ई0 को आप अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ कि तेरी अजीज़ाना राहें उसे पसंद आयीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि इस आजिज़ पर ज़ाहिर किया गया है कि यह ख़ाकसार अपनी ग़रीबी और इंकिसार और तवक्कुल (ख़ुदा पर पूरा भरोसा) और ईसार और आयात (निशानियाँ) और अनवार की रू से मसीह की पहली ज़िंदगी का नमूना है। और इस अजीज़ की फितरत और मसीह की फितरत बाहम निहायत ही मुतशाबेह (समरूप) वाके हुई है। गोया एक ही जौहर के दो टुकड़े या एक ही दरख्त के दो फल हैं और बहद्दे इत्तिहाद के यानी एक ही तरह का इत्तिहाद है कि नजरे कशफ़ी में निहायत ही बारीक इमतियाज़ (अंतर) है और एक मुशाबहत है और वो यूँ कि मसीह एक कामिल और अज़ीमुश्शान नबी, अर्थात मूसा का ताबे (आज्ञाकारी) और ख़ादिम-ए-

दीन था और उसकी इंजील तौरात की शाखा थी और ये आजिज़ भी उस जलील-उश्शान नबी के अह्क़र (तुच्छ) ख़ादिमीन (सेवक) में से है कि जो सय्यद-उर-रसुल और सब रसूलों का सरताज है।

एक दफ़ा एक शख़्स ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. की ख़िदमत में अर्ज़ की कि हुजूर ने 'हकीकत-उल-वही' के लिखने और प्रूफों के बार-बार पढ़ने से बहुत तकलीफ उठाई है और इसके लिए हुज़ूर अलै. की तबीअत भी ख़राब होती रही है। इस लिए अब चंद दिन हुज़ूर अलै. बिलकुल आराम फ़रमाएं। हुज़ूर अलै. ने जवाब दिया कि हमारी मेहनत ही क्या है, हमें तो शर्म आती है जब सहाबा रिज़्वानल्लाही अलैहिम की मेहनतों की तरफ़ निगाह करते हैं कि किस तरह उन लोगों ने ख़ुदा की राह में अपने सर भी कटवा दिए।

एक जगह आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि कम-फ़हम (नादान) लोग एतराज़ करते हैं कि मैं अपने मदारिज (स्तर) को हद से बढ़ाता हूँ। मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि मेरी तबीअत और फ़ितरत में ही यह बात नहीं है कि मैं अपने आपको किसी तारीफ़ का ख़्वाहिशमंद पाऊँ, और अपनी अज़मत के इज़हार से ख़ुश हूँ। मैं हमेशा इंकिसार और अजनबी की जिंदगी को पसंद करता रहा, लेकिन यह मेरे इख्तियार और ताक़त से बाहर था कि ख़ुदा तआला ने मुझे बाहर निकाला और जिस क़दर ने मेरी तारीफ़ और बुज़ुर्गी का इज़हार उसने अपने कलाम में, जो मुझ पर नाज़िल किया है, यह सारी तारीफ और बुज़ुर्गी आँहज़रत ﷺ की ही है।

एक ऑस्ट्रेलियन नौ-मुस्लिम मोहम्मद अब्दुल हक़ साहब को आप अलै. ने फ़रमाया कि हमारे उसूलों में से एक यह भी है कि हम सादा जीवन बसर करते हैं। वो तमाम तकल्लुफ़ात जो कि आज-कल यूरोप ने लवाजिम-ए-जिंदगी (जीवन के लिए आवश्यक) बना रखे है उनसे हमारी मजलिस पाक है, रस्म और आदत के हम पाबंद नहीं.....खाने-पीने और निशस्त और बरखास्त (उठने बैठने) में हम सादगी को पसंद करते हैं।

एक जगह आप अलै. फ़रमाते हैं: आजज़ी इख़्तियार करना चाहिए, आजज़ी का सीखना मुश्किल नहीं है, इस का सीखना ही क्या है। इंसान तो ख़ुद ही आजिज़ (दुर्बल) है और वह आजज़ी के लिए ही पैदा हुआ है। फ़रमाया: मुबारक वो लोग जो अपने तईं सब से ज़्यादा ज़लील और छोटा समझते हैं और शर्म से बात करते हैं... और ज़मीन पर ग़रीबी से चलते हैं। सो मैं बार-बार कहता हूं कि ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए नजात तैयार की गई है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि कुछ लोगों को जलसे के दिनों में आगे की कुर्सी पर बैठकर जलसा सुनने की ख़्वाहिश होती है या ग्रीन एरिया वग़ैरह में सीट की ख़्वाहिश होती है। निकट होकर खलीफा-ए-वक़्त की बात सुनने के लिए तो यह ख़्वाहिश ठीक है मगर बाज़ दफ़ा इस में अनाएं भी शामिल हो जाती हैं। यह नहीं होना चाहिए. क्योंकि इससे व्यवस्था करने वालों के लिए मुश्किल पैदा होती है। हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं कि: इंसान को चाहिए कि जब कहा जावे तो सबसे नीची जगह अपने लिए तजवीज़ करे, और अगर वह किसी और जगह के लाएक़ होगा तो मेज़बान ख़ुद उसे बुलाकर जगह दे देगा।

फ़रमाया: कोई शख़्स मोहब्बत-ए-इलाही और रज़ा-ए-इलाही को हासिल नहीं कर सकता जब तक दो सिफ़ातें इसमें पैदा न हो जाएं। अव्वल तकब्बुर को तोड़ना....दूसरा यह कि पिछले तमाम तल्लुक़ात इसके टूट जाएं ....जो मूजिब-ए-गंदगी और इलाही ना-रज़ामंदी के थे वो सब टूट जाएं।

फ़रमाया: जो बैअत के साथ नफ़सानियत रखता है उसे हरगिज़ फ़ैज़ हासिल नहीं होता। जिस क़दर नरमी तुम इख्तियार करोगे और जिस क़दर विनम्रता और तवाज़ो तुम करोगे अल्लाह तआला उसी क़दर तुम से ख़ुश होगा। इंसान जो एक आजिज़ मख़लूक है अपनी तईं शामत-ए-आमाल से बड़ा समझने लग जाता है। यह शामत-ए-आमाल ही है जो बड़ाई पैदा हो जाती है। किब्र और रऊनत इसमें आ जाती है। अल्लाह की राह में जब तक इंसान अपने आप को सब से छोटा न समझे, छुटकारा नहीं पा सकता। फिर आजज़ी इख्तियार करने की तल्क़ीन करते हुए एक मौक़े पर हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं: अभी तक बहुत से आदमी जमाअत में ऐसे हैं कि थोड़ी सी बात भी ख़िलाफ़-ए-नफ़्स सुन लेते हैं तो इनमें जोश आ जाता है। हालाँकि ऐसे तमाम जोशों को फ़रो (ठंडा) करना बहुत ज़रूरी है ताकि हिल्म और बुर्दबारी तबीअत में पैदा हो। देखा जाता है कि एक अदना सी बात पर बहस शुरू हो जाती है तो एक दूसरे को मग़लूब करने की फ़िक्र में होता है कि किस तरह मैं फ़ातह हो जाऊँ। ऐसे मौक़े पर जोश-ए-नफ़्स से बचना चाहिए और रफ़ा-ए-फ़साद के लिए अदना-अदना बातों में दीदा दानिस्ता ख़ुद ज़िल्लत इख्तियार कर लेनी चाहिए। इस बात की कोशिश हरगिज़ न करनी चाहिए कि मुक़ाबले में उसके दूसरे भाई को ज़लील किया जाए। अगर हम इसका जायज़ा लें, तो अपनी ज़िंदगी में बहुत से लोग ऐसे हैं जो ये झूठी ग़ैरत रखते हैं और अना पाई जाती है इसलिए झगड़े भी बढ़ते हैं, लेकिन अल्लाह तआला की निकटता हासिल करनी है तो इससे नजात हासिल हो जाती है। बल्कि कुछ तो नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करते हैं, गलत रंग में बाज़ दफा शिकायत कर देते हैं कि हमारी फलां जगह लड़ाई हुई थी, फलां जगह इसने मुझे बुरा कहा था, तो अब मैं इसको किसी तरह गलत तरीक़े से भी उसको किसी ग़लत मुक़दमे में या किसी सज़ा में उलझाने की कोशिश करूं।

फ़रमाया: मुतकब्बिर ख़ुदा के तख़्त पर बैठना चाहता है। पस इस क़बीह ख़स्लत से हमेशा पनाह मांगो। ख़ुदा तआला के चाहे तमाम वादे तुम्हारे साथ हों, वादों के बावजूद आजज़ी दिखाओ क्योंकि विनम्रता करने वाला ही ख़ुदा का प्यारा होता है।

एक दफ़ा हुज़ूर अलैहिस्सलाम से दरियाफ़्त किया गया कि हुज़ूर! हदीस में आता है कि सब नबियों ने बकरियाँ चराई हैं। क्या कभी हुजूर अलै. ने भी चराई है? हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हाँ! मैं एक दफा बाहर खेतों में गया वहाँ एक शाखस बकरियां चरा रहा था। उसने कहा मैं एक काम से जाता हूं आप जरा मेरी बकरियों का ख्याल रखें। मगर वो ऐसा गया कि शाम को वापस आया और उसके आने तक हमें उसकी बकरियाँ चरानी पड़ीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. को घर का कोई काम करने से कभी कोई आर न था। चारपाईयां ख़ुद बिछा लेते, फ़र्श साफ़ कर लेते, बिस्तरा कर लिया करते, जिस तरह का खाना भी होता, आप खा लिया करते थे। आप अलै. ने कभी 'तू' कह कर बात नहीं की, हमेशा 'जी' कह कर बात करते थे। आप अलै. में तकब्बुर नाम का भी नहीं था।

मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी साहब जब नए-नए दिल्ली से इल्म हासिल करके आए तो उस ज़माने में हुजूर अलै. के साथ उनका एक मुबाहिसा हुआ जिस में हुजूर अलै. ने मौलवी साहब से इब्तिदा में उनके अक़ायद के बारे में पूछा। जब मौलवी साहब ने अपनी मान्यताएं बताई तो हुजूर अलै. ने फरमाया कि मैं आपके अकीदों में कोई काबिल-ए-एतराज़ बात नहीं पाता। इस लिए आपसे बहस की कोई ज़रुरत नहीं है। जो लोग हुजूर अलै. को लेकर गए थे वो बहुत परेशान हुए कि इस तरह तो हमें

शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। मगर हुज़ूर अलै. ने झूठी इज़्ज़त की कोई परवाह नहीं की। हुजूर अलै. ने ख़ुद फ़रमाया कि मौलवी साहब के अकाएद सुन कर, चूंकि उनमे कोई क़ाबिल-ए-एतराज़ बात न थी, इस लिए खास अल्लाह के लिए बहस को छोड़ दिया। उस रात अल्लाह तआला ने इल्हामन फ़रमाया: तेरे इस फ़ेल से राज़ी हुआ और वो तुझे बहुत बरकत देगा यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूढ़ेंगे।

आप अलै. ने मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी साहब को लिखे गए एक पत्र में अपनी निहायत आजज़ी का इज़हार फ़रमाया है। आप अलै. ने लिखा कि यह आजिज़ एक उम्मी और जाहिल आदमी है, न इबादत है न रियाज़त है, न इल्म है न लियाकत है, ग़रज़ कुछ भी चीज़ नहीं। ख़ुदा तआला की तरफ से एक आदेश था, और क़तई व यक़ीनी था, जो इस अजिज़ ने पहुंचा दिया, मानना न मानना अपनी-अपनी राय और समझ पर मौक़ूफ़ है।

जब हुज़ूर अलै. ने मसील-ए-मसीह होने का दावा किया तो मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी ने सख़्त मुख़ालफ़त की। बड़े ना-शाइस्ता पत्र लिखे। अपने रसाले 'इशाअतुससुन्ना' में भी आप अलै. के लिए ख़िलाफ़-ए-तहज़ीब अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। इस सब के बावजूद हुज़ूर अलै. ने हिल्म, तहम्मुल और इज्ज़ व इंकिसार का निहायत आला नमूना दिखाया।

एक ख़त में हुज़ूर अलै. ने मौलवी मोहम्मद हुसैन बतलावी साहब को लिखा कि मुझे फ़तह व शिकस्त से कुछ तअल्लुक़ नहीं बल्कि उबूदियत व एताअत-ए-हुक्म से ग़रज़ है। मुझे पता है कि इस खिलाफ़ में (मौलवी साहब की) नियत बख़ैर होगी, लेकिन मेरे नज़दीक बेहतर है कि आप, अव्वल मुझसे बात-चीत करके और मेरी किताबों को, यानी रसाला सलासा, फ़तह इस्लाम, 'तौज़ीह-ए-मराम' और 'इज़ला-ए-औहाम' को देख कर कुछ तहरीर करें। मुझसे इससे कोई ग़म और रंज नहीं कि आप जैसे दोस्त मुख़ालफ़त पर अमादा हों। यह मुख़ालफ़त-ए-राय भी हक़ के लिए होगी।

एक और ख़त में आप अलै. ने मौलवी साहब को लिखा कि मेरे ख़याल में अख़लाक़ के तमाम हुसूल में से जिस क़दर ख़ुदा तआला तवाज़ो और विनीता और इंकिसार और हर एक ऐसे तज़ल्लुल को जो मुनाफ़े-ए-नख़्वत है, पसंद करता है, ऐसा कोई शोबा उसको ख़ुल्क़ का पसंद नहीं है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आप अलैहिस्सलाम का हर क़ौल व फ़ेल आजज़ी के इजहार से भरा हुआ था। केवल एक जुस्तजू (जिज्ञासा) थी और वह यह कि ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल हो, उस की वहदानियत को दुनिया में फैलाया जाए। हमें भी हुजूर अलै. ने यही नसीहत फ़रमाई है। अल्लाह तआला हमें भी इन बातों पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَن یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131